जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्व विद्यालय, जबलपुर

जवाहर कृषि संदेश

कृषि विज्ञान केन्द्र, डिण्डौरी

अंक–25 वर्ष–7 उन्नत खेती हेतु त्रैमासिक समाचार पत्रक अप्रैल से जून 2014

भिण्डी की फसल में कीट प्रबंधन के उपाय

सब्जी वर्गीय फसल में भिण्डी का विशेष योगदान है। भिण्डी की खेती तीनों मौसम में की जा सकती है, परंतु इसकी गुणवत्ता एवं उत्पादन को हानिकारक कीड़े एवं बीमारियाँ नुकसान पहुँचाते है। इसे हानि पहुँचाने वाले प्रमुख कीट इस प्रकार है–

1.फुदका : इस कीट के शिशु तथा वयस्क दोनों ही पत्तियों से रस चूसकर हानि करते हैं ।प्रसित पत्तियाँ किनारों से पीली पड़ना प्रारम्भ होती है तथा बाद में पूरी पत्ती पीली पड़कर सूख जाती है और सिकुड़कर पौधे की ओर मुड़ जाती है ।

नियंत्रण :

1.प्रतिरोधी किस्में परभनी क्रांति , वी आर.ओ.6 का उपयोग करे ।

2. कीट ग्रसित फसल पर डाइमिथोएट 30 ई.सी. या मिथाइल डेमेटॉन 25 ई.सी. 750 मिली, प्रति हैक्टेयर की दर से 500 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करे।

2.प्ररोह एवं फल छेदक : इस कीट की इल्ली अवस्था हानिकारक होती है ।प्रारंभ में इल्ली कोमल टहनियों में छेद करके अंदर घुस जाती है और गूदा खाती है जिससे पत्तियाँ सूखकर मुरझा जाती है और टहनी का ऊपरी हिस्सा मुरझाकर लटक जाता है ।फल लगने पर इल्ली उसमें घुसकर गूदा खाकर फलों को खराब कर देती है । ग्रसित फल मुड़ जाते है ।

नियंत्रण :

1.ग्रीष्मकालीन गहरी जुताई करें ।

2.आसपास उग रहे मालवेसी कुल के खरपतवारों को नष्ट करें ।

3.ग्रसित टहनियों और फलों को समय – समय पर तोड़कर नष्ट करें ।

4.प्रोफेनोफॉस 40ई.सी. का 1.0 ली. 500 लीटर पानी मे घोल बनाकर छिड़काव करें ।

3. लाल मकड़ा : इस कीट के शिशु एवं वयस्क दोनों ही रस चूसकर हानि करते हैं । ये कोमल तनों , पत्तियों तथा फलों पर चिपक कर रस चूसते है फलस्वरुप पत्तियाँ पीली पड़कर सूख जाती है। यह कीट बीजों पर भी आक्रमण करता है जिससे बीज खोखले हो जाते है और बोने योग्य नही रहते ।

नियंत्रण :

1.खेत की निंदाई गुड़ाई समय–समय पर करें ।

2.मिथाइल पैराथियान चूर्ण की 25 किलोग्राम मात्रा प्रति हेक्टर भुरकाव करें ।

4. सफेद मक्खी : इस कीट के शिशु तथा वयस्क दोनों ही हानिकारक अवस्थायें है । यह एक रसचूसक कीट है और यह विषाणु रोग का

(शेष पृष्ठ 2 पर)

मृदा परीक्षण हेतु मिट्टी के नमूने एकत्रित करने का तरीका

महत्व एवं लाभ

मिट्टी परीक्षण के द्वारा मिट्टी में उपलब्ध पोषक तत्वों की मात्रा मालूम हो जाती है जिससे उर्वरकों की संतुलित मात्रा का उपयोग किया जा सकता है। उर्वरकों के संतुलित उपयोग से उपज अधिक प्राप्त होती है जिससे लागत में कमी एवं शुद्ध लाभ में वृद्धि होती है। कौन सा उर्वरक कितनी मात्रा में डालना है यह ज्ञात हो जाता है।

मिट्टी के नमूने एकत्रित करने का तरीका

◆ प्रत्येक खेत से अलग अलग नमूना लेवें नमूना फसल का बोनी के पहले इकट्ठा करना चाहिये जबकी खेत में कोई रासायनिक उर्वरक या गोबर की खाद व कम्पोस्ट खाद इत्यादि डाले न गये हो।

◆ यदि एक ही खेत के अलग अलग भागों में खड़ी फसलों की पैदावार में असमानता हो, मिट्टी का रंग अलग अलग हो, खेत का ढलान ऊंचा नीचा हो या खेत को विभिन्न भागों को विभाजित कीजिये और प्रत्येक का अलग अलग मिला जुला नमूना लीजिये।

◆ एक समान क्षेत्र से मिला जुला नमूना लेने के लिये ज्यादा से ज्यादा 5 एकड़ रकबे से 5 से 10 विभिन्न स्थानों से थोड़ा थोड़ा नमूना एक तसले या टोकरी में एकत्रित कीजिये।

◆ नमूना लेने से पूर्व जमीन मे से घास फूंस साफ कर दीजिये, अगर नमूना खुरपी या फावड़ा से लिया जाये तो वी आकार का खेत में गड्ढा खोद लें।

◆ खेत सूखा हो व जहां फसलें कतारों में बोई हो, वहां कतारों के बीच में से नमूना लीजिये।

◆ असामान्य स्थानों जैसे बांध, सिंचाई, नालिया, दलदली जमीन, पेड़ के पास, खाद के गड्ढे और खाद डाले गये स्थानों से नमूना न लें।

◆ संतोषप्रद नमूना लेने के लिये मिट्टी निकालने की नली या कल्ला चाहिये। यदि नली या बरमा न हो तो फावड़ा या खुरपी का उपयोग करें।

◆ इकट्ठी की हुई मिट्टी को एक कागज या कपड़े पर अच्छी तरह मिलाकर इसकी चौथाई भाग के चौथाई भाग को लेकर शेष मिट्टी छोड़ दीजिये। उस नली हुई मिट्टी में से आधा कि.ग्रा. मिट्टी निकाल लीजिये कुछ देर छाया में सुखाने के बाद कपड़े की थैली में मिट्टी भर दीजिये।

विशेष –1) प्रत्येक खेत से अलग अलग नमूना लेवें।

जब खेत का रकबा फसल की वृद्धि मे जमीन के प्रकार में समतल न हो या अलग अलग तरह की फसलें तथा भिन्न भिन्न प्रकार के उर्वरक दिये गये हो तब उसके अनुसार विभाजन करके नमूने एकत्रित करे। (शेष पृष्ठ 4 पर)

अन्त्योदय मेला 31–1–2014

खेती की समस्याओं का समाधान निःशुल्क किसान मोबाईल संदेश के साथ

ग्रीष्म कालीन गहरी जुताई : सुरक्षित खेती का आसान उपाय

रबी फसलों की कटाई के उपरान्त ही जब खेत में कुछ नमी हो तब ही खेतों की गहरी जुताई आसानी से की जा सकती है। ज्यादातर क्षेत्रों में अप्रैल के द्वितीय सप्ताह तक सभी खेत खाली हो जाते हैं और किसान के पास खेतों की गहरी जुताई करने का पर्याप्त वक्त होता है। अतः मई व जून के महिनों मे तापमान लगभग 40–45 सेल्सीयेड तक पहुँच जाता है। इतने अधिक तापमान पर खेतों मे फसलों को हानि पहुंचाने वाले रोगाणू, कीटों के अण्डे, कीटों की शंखी अवस्था खेत जुतने से ऊपरी सतह पर आ जाते है और सूर्य की तपन से नष्ट हो जाते हैं। वही अनावश्यक अवशेष एवं खरपतवार की जड़ों के साथ होता है। खरपतवार की जड़ें व बीज गहरी जुताई करने से ऊपरी सतह पर आ जाते हैं और अधिक तापमान के प्रभाव से सूख कर नष्ट हो जाते हैं। सामान्यतः कीट व्याधियों व खरपतवारों से 50–60 प्रतिशत फसलोत्पादन की कमी आ जाती है क्योकि फसलों में कीड़ों द्वारा 18–26 प्रतिशत, बीमारियों एवं रोगों के द्वारा 30–35 प्रतिशत तक खरपतवारों द्वारा 20–40 प्रतिशत तक नुकसान होता है। इनके नियंत्रण हेतु कृषकों को रासायनिक दवाओं का छिड़काव करना पड़ता है। जिससे समय, श्रम व लागत अधिक लगती है साथ ही भूमि को नुकसान भी होता है, व कृषि लागत भी बढ़ती है। अतः कम लागत में सुरक्षित खेती हेतु ग्रीष्म कालीन गहरी जुताई एक सस्ता व कारगर कृषि उपाय है।

विधि – रबी फसल की कटाई के तुरन्त बाद खाली खेतों में मिट्टी पलटने वाले हल से (मोल्ड बोर्ड प्लाऊ) द्वारा 9–12 इंच तक गहरी जुताई करके छोड़ देते हैं। खेतों में फसलों की बुवाई के समय बार–बार एक निश्चित पर 8–7 इंच बखर या हेरो चलाने से खेतों में नीचे एक कड़ी परत बन जाती है जिससे वर्षा का सम्पूर्ण पानी खेतों द्वारा नहीं सोखा जाता है जिससे पानी खेतों से बाहर निकल जाता है और अपने साथ मिट्टी और फसलों के लिये आवश्यक पोषक तत्वों को बहा ले जाता है। ग्रीष्मकालीन जुताई 9–12 इंच तक मिट्टी पलटने वाले हल से करने पर यह कड़ी परत टूट जाती है और बरसात का पानी खेतों द्वारा अधिक मात्रा में सोख लिया जाता है मिट्टी धूप तपने से भुरभुरी हो जाती है और मिट्टी में वायु का संचार बढ़ जाता है और खेतों में जल धारण क्षमता बढ़ जाती है।

(पृष्ठ 1 का शेष)

मिण्डी में फसल में.....

सम्वाहक भी होता । यह कीट मधुरस भी उत्सर्जित करता है जिस पर काली फफूंद विकसित हो जाती है। इस फफूंद के काले धब्बे पत्तियों के निम्न तल पर दिखाई पड़ते है। ग्रसित पौधों की पत्तियाँ कमजोर और पीली पड़ जाती है जिससे पौधे की बढ़वार पर विपरीत प्रभाव पड़ता है और पौधे छोटे रह जाते है ।

नियंत्रण :

1. खरपतवारों और मेढ़ों पर लगी घास की सफाई करें ।
2. फसल चक्र अपनायें ।
3. खाद एवं उर्वरक का संतुलित उपयोग करें ।
4. जल निकास की उचित व्यवस्था करें ।
5. रासायनिक नियंत्रण इमिडाक्लोप्रीड 125 मिली. का या मिथाइल डेमेटान 25 ई. सी. 1 लीटर 500 लीटर पानी में प्रति हे.की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें ।

ग्रीष्मकालीन गहरी जुताई के लाभ –

खरपतवार नियंत्रण – फसलों के लिये खरपतवार एक बड़ी समस्या है कभी कभी इनके कारण 20 से 40 प्रतिशत तक उत्पादन कम हो जाता है कुछ ऐसे खरपतवार है जैसे– कांस, मौथा, दूब, इनकी जड़ें भूमि में काफी गहराई तक चली जाती है। जिनका नियंत्रण निंदाई, गुड़ाई, व खरपतवार नाशी रसायनों से पूर्ण रूप से नहीं हो पाता है। गहरी जुताई से इनके राइजोम व जड़ें बाहर निकल आती है अधिक धूप से सूखकर नष्ट हो जाती है।

कीट–व्याधि नियंत्रण – रबी की फसलों को हानि पहुंचाने वाले रोग के रोगजनक, रोगाणू, हानिकारक कीड़े फसल की कटाई के बाद खेतों में ही मिट्टी की दरारों में सुषुप्तावस्था में पड़े रहते हैं और जब अगली फसल बोई जाती है तो रोगजनक रोगाणू कीड़े सक्रीय होकर फसलों को हानि पहुंचाना प्रारम्भ कर देते हैं। कभी कभी इन रोगाणुओं एवं कीटों के कारण सम्पूर्ण फसल नष्ट हो जाती है।ग्रीष्म कालीन जुताई से रबी फसल की कटाई के बाद खाली खेतों की गहरी जुताई हो जाने से ये रोगजनक कीड़े भूमि के ऊपरी सतह पर आ जाते हैं। सूर्य की तपन से सूखकर नष्ट हो जाते हैं।

मृदा उर्वरता में वृद्धि – पृथ्वी पर पाये जाने वाले वायुमण्डल में सबसे अधिक मात्रा में नाईट्रोजन गैस होती है जो कि फसलों के लिये अनोपयोगी रूप से नत्रजन उपलब्ध कराती है। विभिन्न रासायनिक क्रियाओं के कारण यह गैस वर्षा के जल में घुल जाती है जब पहली बरसात होती है तब उसमें नत्रजन की अधिक मात्रा होती है। जो फसलों के लिये आवश्यक है। खेत गहरे जुते होने पर यह वर्षा की सम्पूर्ण पानी खेतों द्वारा सोख लिया जाता है। जो खेतों की उर्वरता में वृद्धि एवं जल धारण क्षमता में वृद्धि होती है। जिससे मृदा कटाव से खेतों को बचाया जा सकता है। साथ ही मिट्टी के साथ पोषक तत्वों का बहने से बचाया जा सकता है।

जल संरक्षण – अभिप्रायतः किसान भाई फसलों की आवश्यकता के अनुसार एक निश्चित गहराई पर 8–7 इंच तक जुताई करते हैं। जिससे इस गहराई के नीचे मिट्टी की एक कड़ी परत बन जाती है जिसके कारण खेतों में जल को सोखने में बाधा उत्पन्न होती है। अतः अप्रैल मई महीने में गहरी जुताई (9 इंच से गहरी) करने से यह कड़ी सतह टूट जाती है जिससे वर्षा का सम्पूर्ण पानी खेतों द्वारा सोख लिया जाता है जिससे जल स्तर बढ़ जाता है।

ध्यान रखने योग्य बातें –

रबी फसल की कटाई हो जाने के तुरन्त बाद खेतों में पर्याप्त नमी रहती है अतः तुरन्त जुताई करें। बिलम्ब से जुताई करने पर मिट्टी सूर्य की तेज धूप में कड़ी हो जायेगी जिससे गहरी एवं अच्छी जुताई नहीं होगी।

खेतों की जुताई मिट्टी पलटने वाले हल से करें ताकि मिट्टी बड़े बड़े ढेलों के रूप में रहे जिससे गर्म लू जमीन में गहराई तक जा कर रोगजनक एवं कीटों की शंखी अवस्था आदि को नष्ट कर दे।

ग्रीष्म कालीन जुताई प्रत्येक वर्ष प्रत्येक खेत में करें यह आवश्यक नहीं है इसके लिये खेतों को 3 हिस्सों में बांट कर प्रत्येक वर्ष एक हिस्से की गहरी जुताई करें इस प्रकार हर तीन वर्ष के अन्तराल में प्रत्येक खेत की जुताई की जा सकती है। जुताई करते समय खेतों के चारों ओर मेढ़ बांधना आवश्यक है जिससे वर्षा का पानी खेतों के बाहर नहीं जा सकेगा और पानी को जमीन सोख लेगी और खेतों की उर्वरता बरकरार रहेगी।

आईसीएआरडीए टीम द्वारा क्षेत्र परिभ्रमण– बांड़ा एवं गौधा

जिसने खाद, बीज स्वयं का अपनाया, वह उन्नत कृषक कहलाया

सामयिक सलाह – क्या करें–कब करें–कैसे करें

फसल –

◆ फसलों की कटाई गहाई करें।कटाई के बाद फसलों को खेत में गट्ठे बांध कर रखें अन्यथा आंधी से उड़ने पर नुकसान होगा।

◆ ग्रीष्म कालीन मूंग, उड़द, सूरजमुखी व चरी मक्का, ज्वार तथा बरबटी की फसलों में आवश्यकतानुसार निंदाई, गुड़ाई व सिंचाई करें।

◆ खाली खेतों में गर्मी की गहरी जुताई मिट्टी पलटने वाले हल से करें।

◆ बारे की फसल में खरपतवार निकालें व सिंचाई करें।

◆ जायद मूंग व सूरजमुखी फसल में सिंचाई करें।

◆ धान की नर्सरी लगाने हेतु खेत की तैयारी करें।

◆ जायद मौसम की (ग्रीष्म कालीन) हरे चारे की फसलों (ज्वार, मक्का व लोबिया) में 10–12 दिन के अन्तराल पर सिंचाई करें तथा ज्वार और मक्का में नाइट्रोजन उर्वरक दें।

◆ भू एवं जल संरक्षण हेतु मेड़बन्दी एवं अन्य कार्य करें।

◆ जायद मूंग व उड़द के समय पर फलियों की तुड़ाई करें ताकि झटकने से नुकसान न हो।

◆ जायद की सभी फसलों में पौध संरक्षण कार्य करें।

उद्यानिकी –

◆ देशी बेर की झाड़ियों की पैबन्ध चढ़ाई (कलिकायन) हेतु कटाई करें।

◆ आम व नीबू वर्गीय पौधों में पौध संरक्षण उपचार करें।

◆ निंबोर की तैयार पौध की रोपाई करें व प्रारंभिक उर्वरकों का प्रयोग करें।

◆ पपीता की नर्सरी तैयार करें।

◆ टमाटर बैंगन सब्जियों में पौध संरक्षण कार्य करें एवं आवश्यकता अनुसार सिंचाई व खड़ी फसल में नाइट्रोजन उर्वरक का प्रयोग करें।

◆ फलदार पौधों में आवश्यकतानुसार सिंचाई करें।

◆ छोटे फल दार पौधों को लू से बचाने के लिये टाटरों बांधे।

◆ बेर से कटाई –छटाई करें तथा ब्रडिंग द्वारा बेर के पौधे तैयार करें।

◆ फलदार पौधे लगाने हेतु निश्चित दूरी पर गड्ढों की खुदाई करें।

◆ खरीफ प्याज हेतु नर्सरी तैयार करें।

◆ सब्जियों में कीडे व बीमारियों की रोकथाम करें।

पशुपालन –

◆ बाह्य परजिवियों से बचाव हेतु दवाई छिड़कें या लगावें।

◆ एथेक्स रोग, गलघोटू रोग व लगड़ा बुखार रोग का टीका लगावें।

◆ कृमिनाशक दवाई पिलायें ।

अन्य –

◆ खेसर मशीन पर कार्य करते समय विशेष सावधानियाँ बरते ताकि दुर्घटना से बचा जा सकें।

◆ खलिहानों में एकत्रित अनाज को चूहे व पक्षियों के नुकसान से बचायें।

◆ अनाज के सुरक्षित भंडार हेतु पुरानी कोठियों की भली भांति सफाई कर कीटनाशी छिड़क कर तैयार रखें।

◆ खरीफ की फसल हेतु मिट्टी के नमूने जाँच हेतु परीक्षण प्रयोगशाला में भिजवायें।

◆ आलू की चिप्स बनायें।

कटाई गहाई में बरतें सावधानियाँ

◆ सर्व प्रथम अच्छी फसल वाले खेत से भिन्न बालियाँ निकालकर अगले वर्ष के लिये शुद्ध बीज तैयार करें।

◆ खलिहान में गोबर से लिपाई करते समय गोबर के साथ दीमक नाशक पाउडर क्लोरोपायरीफास मिला लें।

◆ खलिहान स्थल का चयन विद्युत लाईन व रेल लाईन से दूर करें।

◆ थ्रेसर के कनेक्शन के तारों में कम से कम जोड रखें। तारों के जोड़ों पर टैप अवश्य लगायें।नगें तारों से चिंगारियाँ निकलने से अग्नि दुर्घटनाओं की ज्यादा संभावना रहती है।

◆ थ्रेसर को ठीक से मजबूती से स्थापित करें। गहाई कार्य के समय ढीले कपड़े ना पहने।

◆ खलिहान की सीमा व उसके आस पास बीड़ी गांजा, चिलम आदि न पिये। शराब में नशा करके थ्रेसर पर कार्य करने से गम्भीर दुर्घटनायें हो सकती है।

नरवाई न जलायें किसान

गेंहू की फसल काटने के पश्चात जो तने के अवशेष बचे रहते है, उन्हें नरवाई कहते हैं। यह देखा गया है कि फसल काटने के पश्चात इन नरवाई में आग लगाकर उसे नष्ट करते हैं। नरवाई को आग लगाने से कई तरह के नुकसान होते हैं।

◆ भूमि में उपलब्ध जैव विविधता समाप्त हो जाती है।

◆ भूमि में उपस्थित सूक्ष्म जीव जलकर नष्ट हो जाते हैं। सूक्ष्म जीव जलकर नष्ट होने के फलस्वरूप जैविक खाद का निर्माण बंद हो जाता है।

◆ भूमि कठोर हो जाती है जिसके कारण भूमि की जल धारण क्षमता कम हो जाती है और फसलें जल्दी सूखती हैं।

◆ भूमि की ऊपरी पर्त में ही पौधों के लिये आवश्यक पोषक तत्व होते हैं आग लगाने के कारण वे पोषक तत्व जलकर नष्ट हो जाते हैं।

◆ खेत की सीमा पर लगे पेड़ पौधे (फल वृक्ष)जलकर नष्ट हो जाते हैं।

◆ पर्यावरण प्रदूषित हो जाता है। वातावरण के तापमान में वृद्धि होती है जिससे धरती गर्म होती है।

◆ केंचुऐ नष्ट हो जाते हैं इस कारण भूमि की उर्वरा शक्ति कम हो जाती है।

◆ कार्बन से नाइट्रोजन व फास्फोरस का अनुपात कम हो जाता है। नरवाई जलाने से जन धन की हानि होती है।

कृषि यंत्र द्वारा कार्यशाला प्रक्षेत्र दिवस–मधुर (नूरी)

बीटीपी ट्रेनिंग एम.पी.बीज प्रोग्राम

उन्नत कृषि तकनीक अपनाओ खेती में खुशहाली लाओ

पौधा किस्म संरक्षण प्रशिक्षण

कला दिवस गेंहू दिवस

आगामी तिमाही के कार्यक्रम –

विस्तार गतिविधियाँ (अप्रैल से जून 2014) –

क्र.	विषय	संख्या	प्रतिभागियों की संख्या
1	फिल्म सी.डी.शो	06	120
2	विशेष दिवस	01	40
3	निदेटी परीक्षण अभियान	01	बहु संख्यक
4	विस्तार साहित्य	03	बहु संख्यक
5	वैज्ञानिकों का कृषकों के खेतों में भ्रमण	50	250
6	समूह चर्चा	06	120
7	इन्टरफेस	06	120
8	किसान मोबाईल संदेश अभियान	01	बहु संख्यक
9	गहरी जुताई	01	बहु संख्यक
10	समाचार पत्रों में खबरें	06	बहु संख्यक
11	बीज उपचार अभियान	01	बहु संख्यक

कृषकों व कृषक महिलाओं के लिये प्रशिक्षण –

क्र.	विषय	संख्या	अवधि	प्रशिक्षणार्थी
1	पौध संरक्षण	03	03	75
2	कृषि विस्तार	04	04	100
3	फसल उत्पादन	03	03	75

ग्रामीण युवकों के लिये व्यावसायिक प्रशिक्षण –

क्र.	विषय	संख्या	अवधि	प्रशिक्षणार्थी
1	बीज उत्पादन तकनीक	01	05	25
2	सोयाबीन के विभिन्न उत्पाद	01	05	25

अन्त: सेवाकालीन प्रशिक्षण –

क्र.	विषय	संख्या	अवधि	प्रशिक्षणार्थी
1	उचित प्रबंधन द्वारा फसलों की उत्पादकता बढ़ाना	01	02	30

प्रायोजक – डॉ. कृषि दीक्षित, कार्यक्रम समन्वयक (डाक विज्ञान) मो.– 9425629446
संपादन एवं संचालन – श्रीमती नीता सिंह, विषय वस्तु विशेषज्ञ (कृषि प्रसार) मो.– 9981166789
संपादन सहयोग– श्री टी. एल. अम्बुलकर, विषय वस्तु विशेषज्ञ(पौध संरक्षण) मो.– 9424710960
श्रीमती रेनू पटेल, कार्यक्रम सहायक (कम्प्यूटर) मो.– 9893350403
सहयोगी संस्थान "आत्म"
श्री के.पी.मरावी परियोजना संचालक "आत्म" मो.– 9424718990
श्री विनय डेहरिया सहायक परियोजना संचालक "आत्म" मो.– 8085457918
श्री आर.डी.साहू उप संचालक 'कृषि' मो.– 9425419673
मुद्रक – श्री जी.सिंह, डिण्डौरी मो. 9425165647

(पृष्ठ 1 का शेष)

मृदा परीक्षण हेतु मिट्टी के नमूने... –

2) मिला जुला नमूना लीजिये।

प्रत्येक खेत मे से मिला जुला नमूना लीजिये नमूना लेने से पूर्व खेत के ऊपरी सतह साफ कीजिये तत्पश्चात 6 इन्च की गहराई तक से 15–20 स्थानों से नमूने एकत्रित कीजिये।

3) जहां फसलें कतारों में बोई हो, वहां कतारों के बीच में से नमूना लीजिये।

असामान्य स्थानों जैसे बांध, सिंचाई, नालिया, दलदली जमीन, पेड़ के पास, खाद के गड्ढे और खाद डाले गये स्थानों से नमूना न लें।

सही औजार का उपयोग करें

उचित नमूने एकत्रित करने के लिये सही औजार का उपयोग करें।

सही आकार के गडढे से नमूना एकत्रित करें

15 से 20 से.मी. के त्रिकोन गढढे से नमूना निकालें।

मिट्टी के नमूने तैयार करें

नमूना लेते समय ध्यान रखने योग्य बातें–

1. नमूना सूखे खेत से लें। 2. ढलान के अंत से या गड्ढो से नमूना न लें। 3. मेढों के पास से तथा वृक्षों की जड़ों के पास से नमूना न लें। 4. गोबर की खाद एवं उर्वरक या सिंचाई की नालियों के पास से नमूना न लें 5. शुद्धता पूर्वक साफपानी से भरें। 6. सूक्ष्म तत्वों के परीक्षण हेतु नमूना लेते समय स्टेंनलेस स्टील या लकड़ी से बने औजारों का ही उपयोग करें।

प्रति बुक–पोस्ट

.....

.....

.....